



## 9. चक्षुष्मान् अन्ध एव



संस्कृत साहित्य में बाणभट्ट गद्यसम्राट के रूप में जाने जाते हैं। वे सातवीं सदी के पूर्वार्द्ध में सम्राट हर्षवर्धन के समय (उत्तर भारत) में हुए थे। उनका जन्म वत्स गोत्र में हुआ था। उनके पिता का नाम चित्रभानु और माता का नाम राजदेवी था। उन्होंने हर्षचरित और कादम्बरी नामक गद्यकाव्य के दो ग्रन्थों की रचना की। इसमें से 'कादम्बरी' की कथावस्तु काल्पनिक है, जबकि हर्षचरित की कथावस्तु ऐतिहासिक है। समकालीन सम्राट हर्षवर्धन के जीवन के कुछ प्रसंगों का हर्षचरित में निरूपण किया गया है। इसमें (हर्षचरित में) कुल आठ प्रकरण हैं जिसे उच्छ्वास नाम दिया गया है। प्रस्तुत पाठ 'हर्षचरित' के प्रथम उच्छ्वास से सम्पादित करके लिया गया है।

पितामह ब्रह्मा की सभा में ऋषि दुर्वासा सामवेद के मन्त्रों का गान कर रहे थे, उसी समय किसी कारणवश अन्य मुनि के साथ झगड़ पड़े। परिणामतः मंत्र गान में भूल हो गई। अतः देवी सरस्वती हँस पड़ीं। देवी सरस्वती को हँसते हुए देख दुर्वासा क्रोधित हुए। क्रोध के कारण विवेक-हीन बने दुर्वासा ने देवी सरस्वती को पृथ्वी पर अवतार लेने का शाप दे दिया। दुर्वासा के क्रोधी स्वभाव से डरकर अन्य ऋषि-मुनि तो मौन हो गए, परन्तु पितामह ब्रह्मा ने ऋषि दुर्वासा को कठोर शब्दों में चेतावनी दी। ब्रह्मा के द्वारा दी गई चेतावनी का वर्णन प्रस्तुत पाठ में किया गया है।

क्रोध व्यक्ति में अच्छे और बुरे के विवेक को नष्ट कर देता है। इसलिए मनुष्य आँखवाला होते हुए भी नेत्रविहीन बन जाता है। मानव मन में क्रोध उत्पन्न होने से जो शारीरिक प्रतिक्रियाएँ होती हैं और क्रोध के कारण जो दुष्परिणाम प्राप्त होते हैं उनकी ओर यहाँ अँगुलिनिर्देश किया गया है। क्रोधांध व्यक्ति आँख होते हुए भी किन-किन बातों को नहीं देख सकता, उसका वर्णन कर क्रोध से दूर रहने की सीख अत्यंत सहज रूप से इस पाठ में दी गई है।

अथ तां तथा शप्तां सरस्वतीं दृष्ट्वा पितामहो  
मङ्गलपटहेनेव स्वरेण आशाः पूरयन् सुधीरं दुर्वाससम्  
उवाच ।

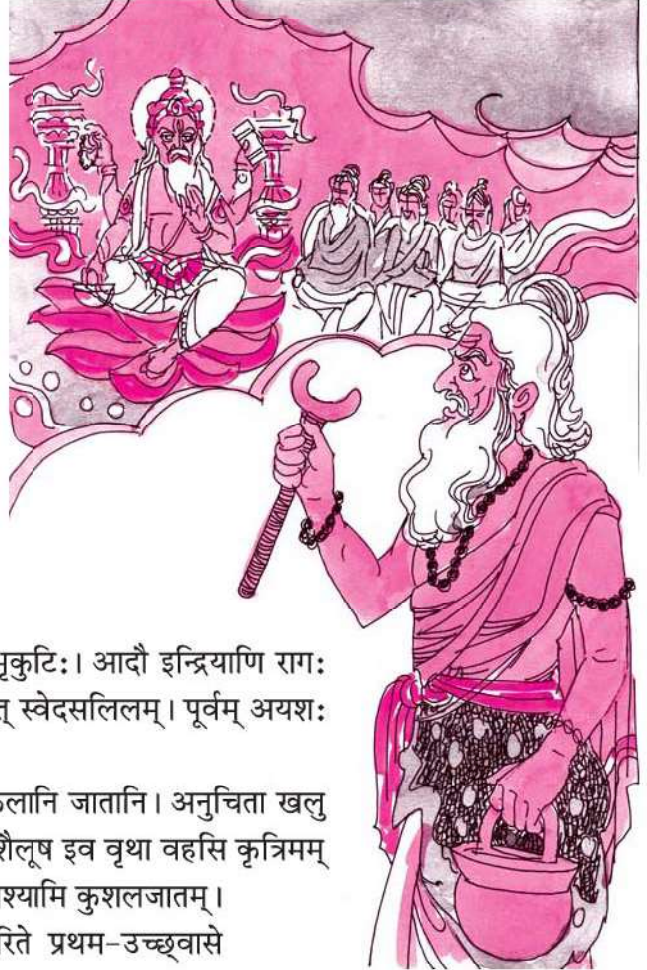
ब्रह्मन्, न खलु साधुसेवितोऽयं पन्थाः येनासि  
प्रवृत्तः । निहन्त्येष परस्तात् । इन्द्रियाश्चसमुत्थापितं हि  
रजः कलुषयति दृष्टिम् अनक्षजिताम् । कियद् दूरं वा  
चक्षुरीक्षते । विशुद्धया हि धिया पश्यन्ति कृतबुद्धयः  
सर्वान् अर्थान् असतः सतो वा । निसर्गविरोधिनी चैयं  
पयःपावकयोरिव धर्मक्रोधयोरैकत्र वृत्तिः । आलोकमपहाय  
कथं तमसि निमज्जसि । क्षमा हि मूलं सर्वतपसाम् ।  
परदोषदर्शनदक्षा दृष्टिरिव कुपिता बुद्धिः न ते आत्मदोषं  
पश्यति । क्व महातपोभारवैवधिकता, क्व पुरोभागित्वम् ।

अतिरोषणः चक्षुष्मान् अन्ध एव जनः ।

न हि कोपकलुषिता विमृशति मतिः कर्तव्यमकर्तव्यं  
वा । कुपितस्य प्रथमम् अन्धकारीभवति विद्या, ततो भृकुटिः । आदौ इन्द्रियाणि रागः  
समास्कन्दति, चरमं चक्षुः । आरम्भे तपो गलति, पश्चात् स्वेदसलिलम् । पूर्वम् अयशः  
स्फुरति, अनन्तरम् अधरः ।

कथं लोकविनाशाय ते विषपादपस्येव जटावल्कलानि जातानि । अनुचिता खलु  
अस्य मुनिवेषस्य हारयष्टिरिव वृत्तमुक्ता चित्तवृत्तिः । शैलूष इव वृथा वहसि कृत्रिमम्  
उपशमशून्येन चेतसा तापसाकल्पम् । अल्पमपि न ते पश्यामि कुशलजातम् ।

- हर्षचरिते प्रथम-उच्छ्वासे





## टिप्पणी

**संज्ञा :** ( पुल्लिङ्ग ) पितामहः ब्रह्मा (पुराणों के अनुसार मानव सृष्टि की उत्पत्ति ब्रह्मा से हुई है अतः उन्हें पिता के पिता अर्थात् पितामह कहते हैं।) **पटहः** नगाड़ा **दुर्वासाः** ऋषि का नाम (क्रोधी ऋषि के रूप में प्रसिद्ध) **अर्थः** पदार्थ के गुण **आलोकः** प्रकाश **रागः** (संदर्भित अर्थ) आसक्ति, (अन्य अर्थ) लालिमा **निसर्गः** स्वभाव, प्रकृति **विषपादपः** विषाक्त वृक्ष, जहर का पौधा **शैलूषः** नट **आकल्पः** वेष

(स्त्रीलिङ्ग) आशा दिशा **वृत्ति** स्थिति, व्यवहार **भृकुटि** भ्रमर, भौंह **हारयष्टि** शृङ्खला **वैवधिकता** भार सहन करने की क्षमता-शक्ति

**विशेषण :** **शप्ताम् (सरस्वतीम्)** श्राप (शाप) युक्त (सरस्वती को) **इन्द्रियाश्वसमुत्थापितम् (रजः)** इन्द्रिय रूपी अश्वों (घोड़ों) द्वारा उड़ाई गई (धूल) **कियद् (दूरम्)** कितनी (दूर) **विशुद्धया (धिया)** शुद्ध (बुद्धि द्वारा) **परदोषदर्शनदक्षा (दृष्टिः)** दूसरों का दोष देखने में निपुण (दृष्टि) **कोपकलुषिता (मतिः)** क्रोध से मलिन (दूषित) हुई बुद्धि **अतिरोषणः चक्षुष्मान् (जनः)** अत्यन्त क्रोधित हुई आँखोंवाले (मनुष्य) **वृत्तमुक्ता (चित्तवृत्तिः)** सदाचार रहित (मनोवृत्ति) **उपशमशून्येन (चेतसा)** शान्ति रहित (मन से)

**अव्यय :** **परस्तात्** भविष्य में, बाद में **एकत्र** इकट्ठा, एक साथ **क्व** कहाँ **अनन्तरम्** बाद में (उसके) बाद **पश्चात्** बाद में, बाद

**समास :** मङ्गलपटहेन (मङ्गलः चासौ पटहः, तेन - कर्मधारय)। साधुसेवितः (साधुभिः सेवितः - तृतीया तत्पुरुष)। इन्द्रियाश्वसमुत्थापितम् - इन्द्रियाणि एव अश्वाः ( - इन्द्रियाश्वाः, कर्मधारय), इन्द्रियाश्वैः समुत्थापितम् - तृतीया तत्पुरुष)। कृतबुद्धयः (कृता बुद्धिः येन, ते - बहुव्रीहि)। निसर्गविरोधिनी (निसर्गस्य विरोधिनी - षष्ठी तत्पुरुष)। पयःपावकयोः (पयः च पावकश्च, तयोः - इतरेतर द्वन्द्व)। धर्मक्रोधयोः (धर्मः च क्रोधः च, तयोः - इतरेतर द्वन्द्व)। सर्वतपसाम् (सर्वम् च तत् तपः, तेषाम् - कर्मधारय)। परदोषदर्शनदक्षा (परस्य दोषः - परदोषः, षष्ठी तत्पुरुष), परदोषस्य दर्शनम् ( - परदोषदर्शनम्, षष्ठी तत्पुरुष), परदोषदर्शने दक्षा - सप्तमी तत्पुरुष)। आत्मदोषम् (आत्मनः दोषः, तम् - षष्ठी तत्पुरुष)। महातपोभारवैवधिकता (महत् च तत् तपः (कर्मधारय), महातपसः भारः महातपोभारः (षष्ठी तत्पुरुष), महातपोभारस्य वैवधिकता - षष्ठी तत्पुरुष)। कोपकलुषिता (कोपेन कलुषिता - तृतीया तत्पुरुष)। स्वेदसलिलम् (स्वेदस्य सलिलम् - षष्ठी तत्पुरुष)। लोकविनाशाय (लोकानां विनाशः, तस्मै - षष्ठी तत्पुरुष)। विषपादपस्य (विषस्य पादपः, तस्य - षष्ठी तत्पुरुष)। जटावल्कलानि (जटा च वल्कलानि च - इतरेतर द्वन्द्व)। मुनिवेषस्य (मुनेः वेषः, तस्य - षष्ठी तत्पुरुष)। हारयष्टिः (हारः एव यष्टिः - कर्मधारय)। वृत्तमुक्ता (वृत्तेन मुक्ता - तृतीया तत्पुरुष)। चित्तवृत्तिः (चित्तस्य वृत्तिः - षष्ठी तत्पुरुष)। उपशमशून्येन (उपशमेन शून्यम्, तेन - तृतीया तत्पुरुष)। तापसाकल्पम् (तापसस्य आकल्पः, तम् - षष्ठी तत्पुरुष)।

**कृदन्त :** ( सं.भू.कृ. ) दृष्ट्वा देखकर **अपहाय** छोड़कर ( क.भू.कृ. ) प्रवृत्तः प्रवृत्त हुए, लगे

## विशेष

**1. शब्दार्थ :** **चक्षुष्मान् अन्ध एव** आँख होते हुए भी अंधा ही **पूरयन्** भर देता हुआ **सुधीरम्** गंभीरतापूर्वक **उवाच** बोले **ब्रह्मन्** हे ब्राह्मण (यहाँ यह सम्बोधन ब्रह्माजी ने ऋषि दुर्वासा के लिए किया है) **साधुसेवितः** सज्जनों द्वारा आचरण किया गया हो ऐसा **पन्थाः** मार्ग, रास्ता **निहन्ति** वध कर देते हैं **कलुषयति** मलिन करता है **अनक्षजिताम्** चंचल इंद्रियवालों की **धिया** बुद्धि से **कृतबुद्धयः** शुद्ध बुद्धि वाले **असतः सतः वा अर्थान्** गलत या सही विषय को **पयःपावकयोः** इव पानी एवं अग्नि के समान **तमसि** अंधकार में **निमज्जसि** (तुम) डूब रहे हो **महातपोभारवैवधिकता** भयंकर तप के भार को वहन (उठाने, सहने) करने की शक्ति **पुरोभागित्वम्** दूसरों के दोष देखने की वृत्ति **अन्धकारीभवति** अंधी बन जाती है, नष्ट हो जाती है **समास्कन्दति** आक्रमण करते हैं, चारों ओर से घेर लेते हैं **चरमम्** अंतिम, बाद का, पीछे का **तापसाकल्पम्** तपस्वी के वेष को ( **आकल्प=वेष** ) **कुशलजातम्** कुशलता के समूह को, अनेक कुशलताओं (प्रवीणता) को

**2. सन्धि :** पितामहो मङ्गलपटहेनेव (पितामहः मङ्गलपटहेन इव) । साधुसेवितोऽयम् (साधुसेवितः अयम्) । येनासि (येन असि) । निहन्त्येष परस्तात् (निहन्ति एषः परस्तात्) । चक्षुरीक्षते (चक्षुः ईक्षते) । सतो वा (सतः वा) । चैयम् (चैयम्) । पयःपावकयोरिव (पयःपावकयोः इव) । धर्मक्रोधयोरेकत्र (धर्मक्रोधयोः एकत्र) । आलोकमपहाय (आलोकम् अपहाय) । दृष्टिरिव (दृष्टिः इव) । ततो भृकुटिः (ततः भृकुटिः) । तपो गलति (तपः गलति) । विषपादपस्येव (विषपादपस्य इव) । हायष्टिरिव (हारयष्टिः इव) । शैलूष इव (शैलूषः इव) ।

### स्वाध्याय

#### 1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

- (1) इन्द्रियाश्चसमुत्थापितं रजः किं कलुषयति ? ☐
- (क) मनः (ख) मस्तकम् (ग) दृष्टिम् (घ) सत्यम्
- (2) कुपिता बुद्धिः किं न पश्यति ? ☐
- (क) मार्गम् (ख) परदोषम् (ग) आलोकम् (घ) आत्मदोषम्
- (3) कुपितस्य स्वेदसलिलात् पूर्वं किं गलति ? ☐
- (क) तपः (ख) कर्तव्यम् (ग) रागः (घ) अधरः
- (4) कुपितस्य पूर्वम् अयशः ..... , अनन्तरम् अधरः। ☐
- (क) विमृशति (ख) स्फुरति (ग) कलुषयति (घ) निमज्जति
- (5) 'शैलूष' शब्दस्य कः अर्थः ? ☐
- (क) नर्तक (ख) नट (ग) गायक (घ) पर्वत
- (6) वृत्तमुक्ता चित्तवृत्तिः कीदृशी इव ? ☐
- (क) हारयष्टिः (ख) विषवल्ली (ग) दुष्टबुद्धिः (घ) अविद्या

#### 2. एकवाक्येन संस्कृतभाषायाम् उत्तरत ।

- (1) कृतबुद्धयः कथं पश्यन्ति ?
- (2) धर्मक्रोधयोः एकत्र वृत्तिः कीदृशी ?
- (3) कोपकलुषिता मतिः किं न विमृशति ?
- (4) मुनिवेषस्य का अनुचिता ?
- (5) क्रोधान्धस्य किम् अन्धकारीभवति ?
- (6) दुर्वासाः कीदृशेन चेतसा तापसाकल्पं वहति ?

### 3. समासप्रकारं लिखत ।

- |                        |                      |
|------------------------|----------------------|
| (1) मङ्गलपटहेन .....   | (2) साधुसेवितः ..... |
| (3) कृतबुद्धयः .....   | (4) कोपकलुषिता ..... |
| (5) धर्मक्रोधयोः ..... | (6) विषपादपस्य ..... |

### 4. सन्धिविच्छेदं कुरुत ।

- (1) साधुसेवितोऽयम् .....
- (2) चक्षुरीक्षते .....
- (3) ततो भृकुटिः .....
- (4) अन्ध एव .....

### 5. रेखाङ्कितानां पदानां स्थाने प्रकोष्ठात् उचितं पदं चित्वा प्रश्नवाक्यं रचयत ।

(कदा, कस्य, कीदृशी, कथम्, कः)

- (1) पितामहः सुधीरम् उवाच ।
- (2) आरम्भे तपो गलति ।
- (3) कुपितस्य मतिः कर्तव्यमकर्तव्यं न विमृशति ।
- (4) कुपिता बुद्धिः आत्मदोषं न पश्यति ।

### 6. मातृभाषायाम् उत्तरत ।

- (1) दुर्वासा ने किसे शाप दिया ? क्यों ?
- (2) धर्म और क्रोध का साथ होना किसके समान है ?
- (3) ब्रह्मा ने दुर्वासा की तुलना नट से क्यों की ?
- (4) दुर्वासा के जटावल्कल किसके समान है ? क्यों ?
- (5) क्षमा के विषय में ब्रह्मा के क्या विचार हैं ?

### 7. संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

- (1) क्रोध की शारीरिक असर ।
- (2) ब्रह्मा के द्वारा दुर्वासा की निन्दा ।

### 8. यथायोग्यं संयुज्य पूर्ण वाक्यं रचयत ।

क

ख

- |                                      |                          |
|--------------------------------------|--------------------------|
| (1) आरम्भे तपो गलति                  | (1) अनन्तरम् अधरः ।      |
| (2) आदौ इन्द्रियाणि रागः समास्कन्दति | (2) पश्चात्स्वेदसलिलम् । |
| (3) प्रथमम् अन्धकारीभवति विद्या      | (3) विमृशति मतिः ।       |
| (4) पूर्वम् अयशः स्फुरति             | (4) चरमं चक्षुः ।        |
|                                      | (5) ततो भृकुटिः ।        |

#### प्रवृत्ति

- क्रोध से दूर रहने का उपदेश देने वाली विविध सूक्तियों तथा कहावतों को एकत्र कीजिए ।
- ऋषि दुर्वासा से संबंधित अन्य कथाएँ तथा जानकारियाँ प्राप्त कीजिए ।